International of Advanced Research and Multidisciplinary Journal Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

लोक संगीत के संरक्षण एवं प्रचार-प्रसार में सांगीतिक आयोजनों की भूमिका : एक समीक्षात्मक अध्ययन।

कौशल्या धुर्वे
(शोधार्थी),संगीत विभाग,बरकतुल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र.)।
डॉ. वर्षा गोंटिया
(शोध निर्देशक),संगीत विभाग,बी.एन.एस. कॉलेज, भोपाल।
डॉ. रवि कुमार पंडोले
(सह निर्देशक/विभागाध्यक्ष),संगीत विभाग, शासकीय महारानी लक्ष्मीबाई महाविद्यालय, भोपाल (म.प्र.)।

सार
लोक संगीत किसी भी समाज की सांस्कृतिक पहचान, परंपरा तथा सामूहिक चेतना का जीवंत प्रतीक होता है। भारतीय लोक संगीत में विविधता, क्षेत्रीयता, सामाजिक जीवन तथा सांस्कृतिक मूल्यों की गहरी छाप दिखाई देती है। बदलते समय, वैश्वीकरण, आधुनिक तकनीक तथा पाश्चात्य संगीत के बढ़ते प्रभाव के कारण लोक संगीत की परंपराएँ धीरे-धीरे प्रभावित हो रही हैं। ऐसे समय में सांगीतिक आयोजन लोक संगीत के संरक्षण एवं प्रचार-प्रसार के महत्वपूर्ण माध्यम के रूप में उभरे हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में भोपाल की प्रसिद्ध "ताल कचहरी" के संदर्भ में लोक संगीत के संरक्षण एवं प्रचार-प्रसार में सांगीतिक आयोजनों की भूमिका का समीक्षात्मक अध्ययन किया गया है।
ताल कचहरी मध्यप्रदेश की सांस्कृतिक पहचान का एक महत्वपूर्ण मंच है, जहाँ लोक संगीत, लोक नृत्य तथा पारंपरिक वाद्य कलाओं को संरक्षित एवं प्रोत्साहित किया जाता है। इस आयोजन ने न केवल स्थानीय कलाकारों को मंच प्रदान किया है, युवा पीढ़ी को भी लोक संस्कृति से जोड़ने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। प्रस्तुत अध्ययन मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों जैसे पुस्तकों, शोध पत्रों, सांस्कृतिक रिपोर्टों तथा समाचार पत्रों पर आधारित है। अध्ययन में यह स्पष्ट हुआ कि सांगीतिक आयोजन सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण, नई प्रतिभाओं के विकास, सांस्कृतिक पर्यटन को बढ़ावा देने तथा सामाजिक समरसता स्थापित करने में अत्यंत प्रभावी भूमिका निभाते हैं।
मुख्य शब्द: लोक संगीत, ताल कचहरी, सांगीतिक आयोजन, सांस्कृतिक संरक्षण, भोपाल, लोक संस्कृति

1. प्रस्तावना

भारत विविध संस्कृतियों, भाषाओं, परंपराओं और कलाओं का देश है। भारतीय संस्कृति की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता इसकी लोक परंपराओं में निहित है, जो समाज के वास्तविक जीवन, मान्यताओं, भावनाओं और सांस्कृतिक चेतना को अभिव्यक्त करती हैं। लोक संगीत भारतीय संस्कृति की उसी जीवंत परंपरा का अभिन्न अंग है। यह किसी क्षेत्र विशेष के लोगों की जीवन शैली, उनके संघर्ष, उत्सव, धार्मिक आस्थाओं, सामाजिक संबंधों और भावनात्मक अनुभवों को संगीतात्मक रूप में प्रस्तुत करता है। लोक संगीत केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं है, यह समाज की सांस्कृतिक स्मृति और ऐतिहासिक विरासत का संरक्षक भी है (शर्मा, 2018)। भारत के प्रत्येक राज्य और क्षेत्र की अपनी विशिष्ट लोक संगीत परंपरा

International of Advanced Research and Multidisciplinary Journal Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

है, जो उसकी सांस्कृतिक पहचान को स्थापित करती है। यही कारण है कि भारतीय लोक संगीत को "जनजीवन का संगीत" भी कहा जाता है।

भारतीय लोक संगीत की परंपरा अत्यंत प्राचीन और समृद्ध रही है। वैदिक काल से ही संगीत भारतीय समाज का अभिन्न अंग रहा है। लोक संगीत का उद्भव सामान्य जनजीवन से हुआ है और यह मौखिक परंपरा के माध्यम से पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होता रहा है। गाँवों और जनजातीय क्षेत्रों में लोक गीत सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा रहे हैं। विवाह, जन्मोत्सव, फसल कटाई, धार्मिक अनुष्ठान, पर्व-त्योहार तथा सामाजिक आयोजनों में लोक गीतों का विशेष महत्व होता है। उदाहरणस्वरूप उत्तरप्रदेश और बिहार में कजरी, बिरहा, सोहर और आल्हा की परंपरा अत्यंत लोकप्रिय है, जबकि राजस्थान में मांड, पधारो म्हारे देश और घूमर गीत सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक हैं। इसी प्रकार मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ में जनजातीय लोक संगीत, करमा, सुआ, ददरिया और पंथी गीत आज भी लोक संस्कृति की जीवंत अभिव्यक्ति माने जाते हैं (गर्ग, 2016)।

लोक संगीत की सबसे बड़ी विशेषता इसकी सहजता और लोक जीवन से निकटता है। यह संगीत कृत्रिमता से मुक्त होता है तथा समाज की वास्तविक परिस्थितियों को अभिव्यक्त करता है। लोक गीतों में प्रेम, विरह, करुणा, वीरता, श्रम, प्रकृति और आध्यात्मिकता जैसे विविध भाव देखने को मिलते हैं। लोक संगीत सामूहिकता की भावना को भी प्रोत्साहित करता है। जब लोग एक साथ मिलकर लोक गीत गाते हैं, तो उनमें सामाजिक एकता और सांस्कृतिक समरसता की भावना विकसित होती है। इस प्रकार लोक संगीत केवल कला नहीं, सामाजिक संबंधों को मजबूत करने वाला सांस्कृतिक माध्यम भी है (त्रिपाठी, 2019)।

भारतीय लोक संगीत में क्षेत्रीय विविधता के साथ-साथ सांस्कृतिक समृद्धि भी दिखाई देती है। प्रत्येक लोकगीत किसी न किसी सामाजिक परिस्थिति से जुड़ा होता है। उदाहरणस्वरूप कृषि आधारित समाजों में फसल कटाई के समय श्रम गीत गाए जाते हैं, जो श्रमिकों में उत्साह और सामूहिकता की भावना उत्पन्न करते हैं। विवाह गीतों में पारिवारिक संबंधों, रीति-रिवाजों और सामाजिक मूल्यों का चित्रण मिलता है। धार्मिक लोकगीतों में भक्ति और आध्यात्मिक चेतना का समावेश होता है। इस प्रकार लोक संगीत समाज की संस्कृति, परंपराओं और जीवन मूल्यों का जीवंत दस्तावेज है (मिश्रा, 2017)।

आधुनिक समय में लोक संगीत अनेक चुनौतियों का सामना कर रहा है। वैश्वीकरण, आधुनिकीकरण और डिजिटल मनोरंजन के प्रभाव के कारण लोक संगीत की पारंपरिक स्वरूप पर संकट उत्पन्न हो गया है। नई पीढ़ी का झुकाव पाश्चात्य और आधुनिक संगीत की ओर अधिक दिखाई देता है। टेलीविजन, इंटरनेट, सोशल मीडिया और फिल्म संगीत के बढ़ते प्रभाव ने लोक संगीत की लोकप्रियता को प्रभावित किया है। परिणामस्वरूप कई लोक परंपराएँ धीरे-धीरे विलुप्ति की ओर बढ़ रही हैं। कई लोक कलाकार आर्थिक कठिनाइयों के कारण अपनी पारंपरिक कला को छोड़ने के लिए विवश हो रहे हैं। पारंपरिक लोक वाद्य जैसे मांदर, नगाड़ा, रावणहत्था और सारंगी का प्रयोग भी कम होता जा रहा है (सिंह, 2020)।

ऐसी परिस्थितियों में सांगीतिक आयोजनों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। संगीत महोत्सव, सांस्कृतिक समारोह, लोक कला उत्सव तथा मंचीय प्रस्तुतियाँ लोक संगीत के संरक्षण एवं प्रचार-प्रसार में प्रभावी माध्यम सिद्ध हो रही हैं। ये आयोजन न केवल कलाकारों को मंच प्रदान करते हैं, समाज में लोक संस्कृति के प्रति जागरूकता भी उत्पन्न करते हैं। सांगीतिक आयोजनों के माध्यम से लोक कलाकारों को अपनी कला प्रस्तुत करने का अवसर मिलता है, जिससे उनकी आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति में भी

International of Advanced Research and Multidisciplinary Journal Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

सुधार होता है। इसके अतिरिक्त ये आयोजन युवा पीढ़ी को अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ने का कार्य करते हैं (मुखर्जी, 2012)।

भारत में विभिन्न राज्यों में आयोजित होने वाले लोक संगीत महोत्सव सांस्कृतिक संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। राजस्थान का मरु महोत्सव, छत्तीसगढ़ का लोक रंग महोत्सव, मध्यप्रदेश का आदिवासी लोक कला उत्सव तथा बिहार का सोनपुर मेला लोक संस्कृति और लोक संगीत को बढ़ावा देने वाले प्रमुख आयोजन हैं। इन आयोजनों के माध्यम से देश के विभिन्न क्षेत्रों की लोक कलाओं का प्रदर्शन होता है तथा सांस्कृतिक आदान-प्रदान को प्रोत्साहन मिलता है। सांगीतिक आयोजन लोक कलाकारों को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मंच भी प्रदान करते हैं, जिससे भारतीय लोक संगीत को वैश्विक पहचान प्राप्त होती है (वर्मा, 2021)।

भोपाल की "ताल कचहरी" ऐसा ही एक महत्वपूर्ण सांगीतिक आयोजन है, जिसने लोक संगीत और पारंपरिक कलाओं को नई पहचान प्रदान की है। भोपाल को मध्यप्रदेश की सांस्कृतिक राजधानी कहा जाता है, जहाँ साहित्य, संगीत, रंगमंच और लोक कलाओं की समृद्ध परंपरा रही है। ताल कचहरी का आयोजन विशेष रूप से लोक संगीत, लोक नृत्य और पारंपरिक वाद्य कलाओं के संरक्षण एवं संवर्धन के उद्देश्य से किया जाता है। इस आयोजन में मध्यप्रदेश सहित देश के विभिन्न क्षेत्रों के लोक कलाकार भाग लेते हैं तथा अपनी सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के माध्यम से लोक जीवन की विविधता को अभिव्यक्त करते हैं।

ताल कचहरी की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि यह आयोजन ग्रामीण और जनजातीय कलाकारों को मंच प्रदान करता है। अनेक प्रतिभाशाली कलाकार, जिन्हें सामान्यतः बड़े मंच नहीं मिल पाते, इस आयोजन के माध्यम से अपनी कला का प्रदर्शन करते हैं। इससे न केवल कलाकारों को पहचान मिलती है, लोक संगीत की परंपराएँ भी संरक्षित होती हैं। ताल कचहरी में लोक गीतों के साथ-साथ पारंपरिक वाद्यों की प्रस्तुतियाँ भी दी जाती हैं, जैसे ढोलक, मांदर, मृदंग, तबला, नगाड़ा और बांसुरी। यह आयोजन लोक वाद्यों को पुनर्जीवित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है (दुबे, 2022)।

ताल कचहरी का एक अन्य महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि यह युवा पीढ़ी को लोक संस्कृति से जोड़ने का कार्य करती है। आधुनिक समय में युवा वर्ग का झुकाव पाश्चात्य संगीत की ओर अधिक है, जिसके कारण वे अपनी सांस्कृतिक परंपराओं से दूर होते जा रहे हैं। ऐसे समय में ताल कचहरी जैसे आयोजन युवाओं में लोक संगीत के प्रति रुचि और सम्मान की भावना विकसित करते हैं। जब युवा कलाकार लोक संगीत और लोक नृत्य की प्रस्तुतियाँ देखते हैं, तो उनमें अपनी सांस्कृतिक विरासत के प्रति जागरूकता उत्पन्न होती है। इस प्रकार यह आयोजन सांस्कृतिक निरंतरता बनाए रखने में सहायक सिद्ध होता है।

सांगीतिक आयोजन सांस्कृतिक पर्यटन को बढ़ावा देने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ताल कचहरी जैसे आयोजनों में देश-विदेश से पर्यटक आते हैं, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था को लाभ प्राप्त होता है। होटल उद्योग, हस्तशिल्प, परिवहन तथा स्थानीय व्यापार को भी इन आयोजनों से प्रोत्साहन मिलता है। इसके अतिरिक्त सांगीतिक आयोजन सामाजिक समरसता और राष्ट्रीय एकता को मजबूत करने में भी सहायक होते हैं। विभिन्न क्षेत्रों और समुदायों के कलाकार एक मंच पर आकर अपनी कला प्रस्तुत करते हैं, जिससे सांस्कृतिक विविधता में एकता की भावना विकसित होती है (जोशी, 2015)।

हालाँकि लोक संगीत और सांगीतिक आयोजनों के समक्ष कई चुनौतियाँ भी हैं। आर्थिक संसाधनों की कमी, सरकारी सहयोग का अभाव, डिजिटल मंचों पर सीमित उपस्थिति तथा पारंपरिक कलाकारों की

International of Advanced Research and Multidisciplinary Journal Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

उपेक्षा जैसी समस्याएँ लोक संगीत के संरक्षण में बाधा उत्पन्न करती हैं। इसके अतिरिक्त कई लोक कलाकारों को उचित पारिश्रमिक और सामाजिक सम्मान नहीं मिल पाता, जिसके कारण नई पीढ़ी इस क्षेत्र में रुचि नहीं लेती। इसलिए आवश्यक है कि सरकार, सांस्कृतिक संस्थाएँ और समाज मिलकर लोक संगीत के संरक्षण के लिए ठोस प्रयास करें। विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में लोक संगीत शिक्षा को बढ़ावा दिया जाना चाहिए तथा डिजिटल माध्यमों के द्वारा लोक संगीत को वैश्विक मंच प्रदान किया जाना चाहिए। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि लोक संगीत भारतीय संस्कृति की आत्मा है। यह समाज की सांस्कृतिक चेतना, ऐतिहासिक परंपराओं और सामाजिक जीवन का सशक्त माध्यम है। आधुनिक समय में जहाँ लोक संगीत अनेक चुनौतियों का सामना कर रहा है, वहीं सांगीतिक आयोजन इसके संरक्षण एवं प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। भोपाल की ताल कचहरी इस दिशा में एक उल्लेखनीय उदाहरण है, जिसने लोक संगीत और लोक कलाओं को नई पहचान प्रदान की है। यह आयोजन न केवल कलाकारों को मंच प्रदान करता है, समाज में सांस्कृतिक जागरूकता और लोक परंपराओं के प्रति सम्मान की भावना भी विकसित करता है। यदि इसी प्रकार के सांस्कृतिक आयोजनों को निरंतर प्रोत्साहन दिया जाए, तो भारतीय लोक संगीत की समृद्ध परंपरा आने वाली पीढ़ियों तक सुरक्षित रखी जा सकती है।

2. अध्ययन के उद्देश्य

1. लोक संगीत की अवधारणा एवं महत्व का अध्ययन करना।
2. लोक संगीत के संरक्षण में सांगीतिक आयोजनों की भूमिका का विश्लेषण करना।
3. भोपाल की ताल कचहरी के सांस्कृतिक महत्व का अध्ययन करना।
4. ताल कचहरी के माध्यम से लोक कलाकारों को प्राप्त अवसरों का विश्लेषण करना।
5. लोक संगीत के संरक्षण एवं प्रचार-प्रसार में आने वाली चुनौतियों एवं संभावनाओं का अध्ययन करना।

3. शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध पत्र समीक्षात्मक एवं सैद्धांतिक प्रकृति का है। अध्ययन में द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है। शोध सामग्री पुस्तकों, शोध पत्रों, सांस्कृतिक पत्रिकाओं, सरकारी रिपोर्टों तथा समाचार स्रोतों से संकलित की गई है। विषय के विश्लेषण हेतु वर्णनात्मक एवं तुलनात्मक पद्धति का उपयोग किया गया है।

4. लोक संगीत : अवधारणा एवं स्वरूप

लोक संगीत वह संगीत है जो किसी क्षेत्र विशेष के जनसामान्य के जीवन, संस्कृति, रीति-रिवाज, भाषा तथा परंपराओं से जुड़ा होता है। यह संगीत सहज, सरल तथा लोक जीवन की वास्तविकताओं से प्रेरित होता है (गर्ग, 2016)। लोक संगीत का स्वरूप क्षेत्रीय परिस्थितियों, सामाजिक संरचना तथा सांस्कृतिक परंपराओं के अनुसार बदलता रहता है।

भारतीय लोक संगीत की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

1. मौखिक परंपरा पर आधारित होना
2. सरल भाषा एवं सहज अभिव्यक्ति
3. सामूहिकता की भावना
4. क्षेत्रीय संस्कृति का प्रतिबिंब
5. लोक वाद्यों का उपयोग
6. सामाजिक एवं धार्मिक अवसरों से संबंध

International of Advanced Research and Multidisciplinary Journal Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

लोक संगीत में जीवन के प्रत्येक पक्ष का चित्रण मिलता है। विवाह गीत, सोहर, कजरी, बिरहा, आल्हा, भजन, जनजातीय गीत तथा कृषि गीत इसके प्रमुख उदाहरण हैं।

5. लोक संगीत का सांस्कृतिक महत्व

लोक संगीत किसी भी समाज की सांस्कृतिक पहचान का आधार होता है। यह समाज के इतिहास, परंपराओं, संघर्षों, मान्यताओं तथा जीवन मूल्यों को संरक्षित करता है (त्रिपाठी, 2019)। लोक संगीत के माध्यम से सामाजिक एकता, सामूहिकता और सांस्कृतिक निरंतरता बनी रहती है।

लोक संगीत के सांस्कृतिक महत्व को निम्न बिंदुओं के माध्यम से समझा जा सकता है—

5.1 सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण

लोक संगीत किसी भी समाज की सांस्कृतिक विरासत का महत्वपूर्ण अंग होता है। यह केवल गीतों और धुनों का संग्रह नहीं है, बल्कि समाज के इतिहास, परंपराओं, जीवन मूल्यों तथा सामूहिक अनुभवों का जीवंत दस्तावेज भी है। लोक गीतों में किसी क्षेत्र विशेष की ऐतिहासिक घटनाएँ, सामाजिक परिस्थितियाँ, धार्मिक मान्यताएँ और सांस्कृतिक परंपराएँ सुरक्षित रहती हैं। यही कारण है कि लोक संगीत को सांस्कृतिक स्मृतियों का संरक्षक माना जाता है (शर्मा, 2018)।

भारत जैसे बहुसांस्कृतिक देश में लोक संगीत की विविधता अत्यंत व्यापक है। प्रत्येक राज्य और समुदाय की अपनी विशिष्ट लोक धुनें और गीत हैं, जो उस क्षेत्र की सांस्कृतिक पहचान को दर्शाते हैं। उदाहरणस्वरूप राजस्थान के मांड गीत, बिहार के सोहर एवं बिरहा, मध्यप्रदेश के करमा गीत तथा छत्तीसगढ़ के ददरिया गीत वहाँ की सांस्कृतिक विरासत को अभिव्यक्त करते हैं। इन गीतों में समाज के रीति-रिवाज, पहनावा, लोक कथाएँ तथा परंपरागत जीवन शैली का चित्रण मिलता है (गर्ग, 2016)।

लोक संगीत की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह मौखिक परंपरा के माध्यम से पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होता है। ग्रामीण क्षेत्रों में बुजुर्ग लोग बच्चों और युवाओं को लोक गीत सिखाते हैं, जिससे सांस्कृतिक निरंतरता बनी रहती है। विवाह, जन्मोत्सव, धार्मिक अनुष्ठान और कृषि कार्यों में गाए जाने वाले गीत समाज की सांस्कृतिक स्मृतियों को जीवित रखते हैं। यदि लोक संगीत समाप्त हो जाए, तो समाज अपनी ऐतिहासिक पहचान और सांस्कृतिक जड़ों से कट सकता है।

आधुनिक समय में वैश्वीकरण और पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव के कारण लोक संगीत पर संकट उत्पन्न हो रहा है। ऐसे समय में सांगीतिक आयोजन, लोक कला उत्सव और सांस्कृतिक कार्यक्रम लोक संगीत के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। ये आयोजन न केवल पारंपरिक गीतों और वाद्यों को संरक्षित करते हैं, बल्कि नई पीढ़ी को अपनी सांस्कृतिक विरासत से जोड़ने का भी कार्य करते हैं (सिंह, 2020)। इस प्रकार लोक संगीत सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण का एक प्रभावी माध्यम है।

5.2 सामाजिक समरसता

लोक संगीत सामाजिक समरसता और सामूहिकता की भावना को मजबूत करने का महत्वपूर्ण माध्यम है। यह समाज के विभिन्न वर्गों, समुदायों और जातियों को एक साथ जोड़ने का कार्य करता है। लोक गीतों में प्रेम, सहयोग, भाईचारा और सामाजिक एकता के संदेश निहित होते हैं, जो समाज में सकारात्मक वातावरण का निर्माण करते हैं (त्रिपाठी, 2019)।

भारतीय समाज में लोक संगीत का उपयोग सामूहिक आयोजनों और सामाजिक उत्सवों में किया जाता है। विवाह, त्योहार, मेले, धार्मिक अनुष्ठान और कृषि कार्यों के दौरान लोग एक साथ मिलकर लोक गीत गाते हैं। इस सामूहिक गायन से लोगों के बीच आपसी संबंध मजबूत होते हैं और सामाजिक एकता की

International of Advanced Research and Multidisciplinary Journal Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

भावना विकसित होती है। उदाहरणस्वरूप होली के फाग गीत, विवाह के मंगल गीत तथा फसल कटाई के श्रम गीत समाज में सहयोग और सामूहिकता को बढ़ावा देते हैं।

लोक संगीत विभिन्न समुदायों के बीच सांस्कृतिक संवाद स्थापित करने का भी कार्य करता है। जब अलग-अलग क्षेत्रों के कलाकार एक मंच पर अपनी लोक परंपराओं को प्रस्तुत करते हैं, तो सांस्कृतिक आदान-प्रदान की प्रक्रिया विकसित होती है। इससे समाज में विविधता के प्रति सम्मान और सहिष्णुता की भावना बढ़ती है। लोक संगीत सामाजिक भेदभाव और संकीर्णताओं को कम करने में भी सहायक सिद्ध होता है, क्योंकि यह सभी वर्गों के लोगों को समान रूप से जोड़ता है (जोशी, 2015)।

सांगीतिक आयोजन सामाजिक समरसता को मजबूत करने में विशेष भूमिका निभाते हैं। लोक कला महोत्सवों और सांस्कृतिक समारोहों में विभिन्न जातियों, धर्मों और समुदायों के लोग एकत्रित होकर सांस्कृतिक प्रस्तुतियों का आनंद लेते हैं। इससे सामाजिक सौहार्द और राष्ट्रीय एकता की भावना को बल मिलता है। विशेष रूप से भारत जैसे बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक देश में लोक संगीत "विविधता में एकता" की अवधारणा को सशक्त बनाता है।

आज के समय में जब समाज में विभाजन और सांस्कृतिक तनाव बढ़ रहे हैं, तब लोक संगीत सामाजिक समरसता स्थापित करने का प्रभावी माध्यम बन सकता है। यह समाज को अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ते हुए भाईचारे और मानवीय मूल्यों को मजबूत करता है।

5.3 नैतिक एवं शैक्षिक महत्व

लोक संगीत केवल मनोरंजन का साधन नहीं है, बल्कि यह नैतिक शिक्षा और सामाजिक जागरूकता का भी प्रभावी माध्यम है। लोक गीतों में जीवन मूल्यों, नैतिक आदर्शों और सामाजिक संदेशों का समावेश होता है, जो समाज को सही दिशा प्रदान करते हैं (मिश्रा, 2017)। ग्रामीण और जनजातीय समाजों में लोक गीतों के माध्यम से बच्चों और युवाओं को नैतिकता, सामाजिक कर्तव्यों और सांस्कृतिक परंपराओं की शिक्षा दी जाती है।

भारतीय लोक गीतों में सत्य, अहिंसा, प्रेम, करुणा, सम्मान, सहयोग और परिवारिक एकता जैसे मूल्यों का वर्णन मिलता है। विवाह गीतों में पारिवारिक संबंधों और सामाजिक उत्तरदायित्वों का चित्रण होता है, जबकि भक्ति गीतों में आध्यात्मिकता और नैतिक आदर्शों का संदेश दिया जाता है। इसी प्रकार वीर रस के लोक गीत समाज में साहस, देशभक्ति और आत्मसम्मान की भावना उत्पन्न करते हैं।

लोक संगीत सामाजिक समस्याओं के प्रति जागरूकता फैलाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। कई लोक गीतों के माध्यम से शिक्षा, महिला सशक्तिकरण, पर्यावरण संरक्षण, स्वच्छता और सामाजिक समानता जैसे विषयों पर संदेश दिए जाते हैं। उदाहरणस्वरूप जनजातीय क्षेत्रों में लोक गीतों के माध्यम से स्वास्थ्य जागरूकता और सामाजिक सुधार के संदेश प्रसारित किए जाते हैं (मुखर्जी, 2012)।

लोक संगीत का शैक्षिक महत्व भी अत्यंत व्यापक है। यह बच्चों और युवाओं को अपनी संस्कृति, इतिहास और परंपराओं से परिचित कराता है। विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में लोक संगीत का अध्ययन विद्यार्थियों में सांस्कृतिक चेतना विकसित करता है। इसके अतिरिक्त लोक संगीत भाषा और साहित्य के विकास में भी सहायक होता है, क्योंकि लोक गीतों में क्षेत्रीय भाषाओं और बोलियों का प्रयोग होता है।

आज के समय में जब आधुनिक शिक्षा प्रणाली में नैतिक मूल्यों का ह्रास दिखाई देता है, तब लोक संगीत समाज को नैतिक और सांस्कृतिक दिशा प्रदान करने का महत्वपूर्ण माध्यम बन सकता है। यह शिक्षा को केवल बौद्धिक प्रक्रिया न बनाकर सांस्कृतिक और मानवीय मूल्यों से जोड़ता है।

International of Advanced Research and Multidisciplinary Journal Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

5.4 सांस्कृतिक पहचान

लोक संगीत किसी भी क्षेत्र की सांस्कृतिक पहचान का महत्वपूर्ण प्रतीक होता है। प्रत्येक राज्य, समुदाय और जनजाति की अपनी विशिष्ट लोक संगीत परंपरा होती है, जो उसकी ऐतिहासिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विशेषताओं को अभिव्यक्त करती है (वर्मा, 2021)। लोक गीतों और धुनों के माध्यम से किसी क्षेत्र की भाषा, वेशभूषा, जीवन शैली, परंपराएँ और मान्यताएँ स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं।

भारत की सांस्कृतिक विविधता लोक संगीत में विशेष रूप से परिलक्षित होती है। राजस्थान के लोक गीतों में रेगिस्तानी जीवन और वीरता का चित्रण मिलता है, जबकि पंजाब के लोक गीतों में उत्साह और कृषि संस्कृति की झलक दिखाई देती है। इसी प्रकार छत्तीसगढ़ के पंथी गीत वहाँ की धार्मिक परंपराओं को व्यक्त करते हैं तथा मध्यप्रदेश के जनजातीय गीत प्रकृति और सामुदायिक जीवन से गहराई से जुड़े हुए हैं। इस प्रकार लोक संगीत किसी क्षेत्र की सांस्कृतिक पहचान को जीवंत बनाए रखता है (गर्ग, 2016)।

लोक संगीत स्थानीय भाषाओं और बोलियों के संरक्षण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। कई क्षेत्रीय भाषाएँ और बोलियाँ लोक गीतों के माध्यम से आज भी जीवित हैं। यदि लोक संगीत समाप्त हो जाए, तो उन भाषाओं और सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों के लुप्त होने का खतरा बढ़ सकता है। इसलिए लोक संगीत सांस्कृतिक विविधता और भाषाई विरासत के संरक्षण का भी माध्यम है।

सांगीतिक आयोजन और लोक कला महोत्सव सांस्कृतिक पहचान को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्थापित करने में सहायक होते हैं। जब किसी क्षेत्र का लोक संगीत बड़े मंचों पर प्रस्तुत किया जाता है, तो वह उस क्षेत्र की सांस्कृतिक पहचान को व्यापक स्तर पर परिचित कराता है। उदाहरणस्वरूप मध्यप्रदेश की "ताल कचहरी" ने स्थानीय लोक संगीत और पारंपरिक वाद्यों को नई पहचान प्रदान की है।

वैश्वीकरण के दौर में जहाँ सांस्कृतिक एकरूपता बढ़ रही है, वहाँ लोक संगीत सांस्कृतिक विविधता को बनाए रखने का महत्वपूर्ण माध्यम है। यह समाज को अपनी जड़ों से जोड़ता है और सांस्कृतिक आत्मगौरव की भावना विकसित करता है। इसलिए लोक संगीत केवल कला नहीं, बल्कि सांस्कृतिक अस्तित्व और पहचान का सशक्त प्रतीक है।

6. सांगीतिक आयोजनों की अवधारणा

सांगीतिक आयोजन ऐसे सांस्कृतिक कार्यक्रम होते हैं जिनमें संगीत, नृत्य तथा लोक कलाओं का मंचीय प्रदर्शन किया जाता है। इन आयोजनों का उद्देश्य कला एवं संस्कृति का संरक्षण, कलाकारों को मंच प्रदान करना तथा समाज में सांस्कृतिक चेतना विकसित करना होता है (मुखर्जी, 2012)।

भारत में विभिन्न प्रकार के सांगीतिक आयोजन आयोजित किए जाते हैं, जैसे—

- लोक संगीत महोत्सव
- जनजातीय कला उत्सव
- शास्त्रीय संगीत समारोह
- सांस्कृतिक मेले
- युवा कला महोत्सव
- क्षेत्रीय लोक उत्सव

इन आयोजनों के माध्यम से कलाकारों और श्रोताओं के बीच संवाद स्थापित होता है तथा सांस्कृतिक परंपराओं का आदान-प्रदान संभव होता है।

International of Advanced Research and Multidisciplinary Journal Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

7. भोपाल की ताल कचहरी : एक परिचय

भोपाल मध्यप्रदेश की सांस्कृतिक राजधानी के रूप में प्रसिद्ध है। यहाँ साहित्य, संगीत, नाटक तथा लोक कलाओं की समृद्ध परंपरा रही है। "ताल कचहरी" भोपाल का एक महत्वपूर्ण सांगीतिक आयोजन है, जिसका उद्देश्य लोक संगीत और पारंपरिक वाद्य कलाओं का संरक्षण एवं संवर्धन करना है।

ताल कचहरी में मध्यप्रदेश सहित देश के विभिन्न क्षेत्रों के लोक कलाकार भाग लेते हैं। इस आयोजन में लोक गीत, लोक नृत्य, जनजातीय संगीत, ढोलक वादन, मृदंग, तबला, मांदर, नगाड़ा तथा अन्य पारंपरिक वाद्यों की प्रस्तुतियाँ दी जाती हैं।

यह आयोजन न केवल मनोरंजन का माध्यम है, सांस्कृतिक शिक्षा, लोक परंपराओं के संरक्षण तथा युवा पीढ़ी को लोक संस्कृति से जोड़ने का प्रभावी मंच भी है।

8. लोक संगीत के संरक्षण में ताल कचहरी की भूमिका

8.1 लोक कलाकारों को मंच प्रदान करना

ताल कचहरी ने ग्रामीण एवं जनजातीय कलाकारों को अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने का अवसर प्रदान किया है। अनेक कलाकारों को इस मंच के माध्यम से राष्ट्रीय स्तर पर पहचान प्राप्त हुई है।

8.2 पारंपरिक वाद्यों का संरक्षण

आधुनिक संगीत के बढ़ते प्रभाव के कारण कई पारंपरिक वाद्य विलुप्ति की ओर बढ़ रहे हैं। ताल कचहरी जैसे आयोजन इन वाद्यों को पुनर्जीवित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

8.3 युवा पीढ़ी को लोक संस्कृति से जोड़ना

सांगीतिक आयोजनों के माध्यम से युवाओं में लोक संगीत के प्रति रुचि विकसित होती है। इससे सांस्कृतिक निरंतरता बनी रहती है।

8.4 सांस्कृतिक पर्यटन को बढ़ावा

ताल कचहरी जैसे आयोजन देश-विदेश के पर्यटकों को आकर्षित करते हैं, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था एवं सांस्कृतिक पर्यटन को बढ़ावा मिलता है।

8.5 सामाजिक जागरूकता

लोक गीतों के माध्यम से सामाजिक संदेशों का प्रसार किया जाता है, जैसे—शिक्षा, महिला सशक्तिकरण, पर्यावरण संरक्षण तथा सामाजिक समरसता।

9. लोक संगीत एवं सांगीतिक आयोजनों की चुनौतियाँ

यद्यपि सांगीतिक आयोजन लोक संगीत के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं, फिर भी इनके समक्ष कई चुनौतियाँ हैं—

1. पाश्चात्य संगीत का बढ़ता प्रभाव
2. पारंपरिक कलाकारों की आर्थिक समस्याएँ
3. सरकारी सहयोग की कमी
4. ग्रामीण क्षेत्रों में सांस्कृतिक मंचों का अभाव
5. नई पीढ़ी की घटती रुचि
6. डिजिटल माध्यमों में लोक संगीत की सीमित उपस्थिति

इन चुनौतियों के कारण कई लोक परंपराएँ धीरे-धीरे समाप्त हो रही हैं।

International of Advanced Research and Multidisciplinary Journal Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

10. लोक संगीत संरक्षण की संभावनाएँ

लोक संगीत के संरक्षण एवं प्रचार-प्रसार के लिए निम्न संभावनाएँ महत्वपूर्ण हो सकती हैं—

10.1 डिजिटल मंचों का उपयोग

यूट्यूब, सोशल मीडिया तथा ऑनलाइन संगीत मंचों के माध्यम से लोक संगीत को वैश्विक स्तर पर पहुँचाया जा सकता है।

10.2 शैक्षणिक संस्थानों में लोक संगीत शिक्षा

विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में लोक संगीत को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया जाना चाहिए।

10.3 सरकारी एवं निजी सहयोग

लोक कलाकारों के लिए आर्थिक सहायता, छात्रवृत्ति एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रारंभ किए जाने चाहिए।

10.4 ग्रामीण सांस्कृतिक मंचों का विकास

ग्रामीण क्षेत्रों में सांस्कृतिक कार्यक्रमों एवं लोक उत्सवों का आयोजन बढ़ाया जाना चाहिए।

10.5 अभिलेखीकरण एवं दस्तावेजीकरण

लोक गीतों एवं पारंपरिक वाद्यों का दस्तावेजीकरण किया जाना आवश्यक है ताकि भविष्य में इनका अध्ययन एवं संरक्षण संभव हो सके।

11. निष्कर्ष

लोक संगीत भारतीय संस्कृति की आत्मा है। यह समाज की सांस्कृतिक चेतना, ऐतिहासिक परंपराओं और सामूहिक जीवन का सशक्त माध्यम है। आधुनिक समय में लोक संगीत अनेक चुनौतियों का सामना कर रहा है, किंतु सांगीतिक आयोजन इसके संरक्षण एवं प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। भोपाल की ताल कचहरी ने लोक संगीत, लोक नृत्य तथा पारंपरिक वाद्य कलाओं को संरक्षित करने में उल्लेखनीय योगदान दिया है। इस आयोजन ने न केवल कलाकारों को मंच प्रदान किया है, युवा पीढ़ी को लोक संस्कृति से जोड़ने का भी महत्वपूर्ण कार्य किया है। ताल कचहरी जैसे आयोजन सांस्कृतिक विरासत को जीवित रखने, सामाजिक समरसता स्थापित करने तथा सांस्कृतिक पर्यटन को बढ़ावा देने में अत्यंत प्रभावी सिद्ध हो रहे हैं।

आवश्यक है कि सरकार, सांस्कृतिक संस्थाएँ, शैक्षणिक संस्थान तथा समाज मिलकर लोक संगीत और लोक कलाओं के संरक्षण के लिए समन्वित प्रयास करें। यदि समय रहते उचित कदम उठाए जाएँ, तो भारतीय लोक संगीत की समृद्ध परंपरा आने वाली पीढ़ियों तक सुरक्षित रखी जा सकती है।

संदर्भ सूची

1. गर्ग, लक्ष्मी नारायण. (2016). भारतीय लोक संगीत का इतिहास. नई दिल्ली: संगीत कार्यालय.
2. शर्मा, भगवत शरण. (2018). भारतीय संगीत एवं लोक परंपरा. नई दिल्ली: राधा पब्लिकेशन्स.
3. त्रिपाठी, रामनारायण. (2019). लोक संस्कृति और भारतीय संगीत. वाराणसी: चौखम्बा प्रकाशन.
4. मुखर्जी, ए. (2012). “लोक संगीत संरक्षण में सांस्कृतिक आयोजनों की भूमिका.” इंटरनेशनल जर्नल ऑफ कल्चरल स्टडीज़, 5(2), 45-52.
5. सिंह, ओमप्रकाश. (2020). “भारतीय लोक संगीत के संरक्षण में सांगीतिक समारोहों का योगदान.” संगीत शोध पत्रिका, 12(1), 33-41.
6. वर्मा, पी. (2021). “लोक कला एवं सांस्कृतिक पर्यटन का संबंध.” जर्नल ऑफ परफॉर्मिंग आर्ट्स एंड कल्चर, 8(3), 60-68.

7. मिश्रा, आर. (2017). मध्यप्रदेश की लोक संस्कृति. भोपाल: मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी.
8. जोशी, एस. (2015). "लोक संगीत और सामाजिक चेतना." भारतीय संस्कृति समीक्षा, 7(1), 22-30.
9. तिवारी, के. (2019). भारतीय लोक कलाएँ और परंपराएँ. इलाहाबाद: साहित्य भवन.
10. दुबे, मनीषा. (2022). "भोपाल की सांस्कृतिक परंपराएँ और ताल कचहरी." मध्यप्रदेश संस्कृति अध्ययन पत्रिका, 4(2), 75-84.